Written by नरि्वकिर सहि
Thursday, 14 June 2018 18:00

**:□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ :□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ :□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ :**

□□□□□□□□□ □□□□

□□□□□ :□कआदमी को बचपन से ही वहम था कि रात में उसके पलंग के नीचे कोई होता है। इसलयि □कदनि वह मनोचकित्सिक के पास गया और उसे बताया, 'मुझे □कसमस्या है। जब भी मैं सोने के लयि बस्तिर पर जाता हूँ तो मुझे लगने लगता है कि कोई मेरे पलंग के नीचे छुपा हुआ है। मुझे बहुत डर लगता है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि मैं पागल हो जाऊँगा'

□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□:-

[□□□□□ □□□□□□□□□□]

'तुम साल भर के लयि अपने को मेरे हवाले कर दो', मनोचकित्सिक बोला। 'हफ्ते में तीन बार मेरे पास आओ, मुझसे बात करो, मुझे लगता है मैं तुम्हें इस डर से छुटकारा दलिा दूंगा।'

'आप इस इलाज का कतिना पैसा लेंगे, डॉक्टर सा'ब?'

'पाँच सौ पचास रुपये, हर बार का', डॉक्टर ने जवाब दयिा।

'ठीक है, डॉक्टर सा'ब, मैं पलंग पर सोना चालू करता हूँ और यदि जरुरत पड़ी, तो आपके पास आता हूँ', ऐसा बोलकर वो चल दयिा।

छ: माह बाद, अचानक ही उसकी मुलाकात उस मनोचकित्सिक से सड़क पर हो गई।

'तुम फरि आ□ नहीं; लौटकर, अपने डर के इलाज के लि□ ?' मनोचकित्सिक ने पूछा□

□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□, □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□:-

□□□□□□□□□

'हाँ..दरअसल हर बार का पाँच सौ रुपया...हफ्ते में तीन बार...वो भी साल भर तक!! बहुत ही महँगा सौदा था; मेरे लिये, डॉक्टर सा'ब□ जबकि मेरे □क "वकील " दोस्त ने डेढ़ सौ रुप□ में ही मेरा इलाज करवा दिया□ मनोचिकित्सक को बताया□

'सच? ऐसा है क्या?' कहते हु□ फरि थो□ व्यंग्यात्मक लहजे में मनोचकित्सिक ने आगे पूछा, 'क्या मैं जान सकता हूँ कि कैसे तुम्हारे "वकील "दोस्त ने, डेढ़ सौ रुप□ में ही तुम्हारा इलाज करवा दिया?'

'हाँ, मेरे दोस्त ने मुझे अपने पलंग के चारों पायों को किसी बढ़ई से कटवा लेने की सलाह दी थी□ अब मेरे पलंग के नीचे कोई नहीं रहता, डॉक्टर सा'ब□ '

□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□:-

Written by निर्विकार सिंह
Thursday, 14 June 2018 18:00

□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□

मॉरल ऑफ द स्टोरी :

हर बीमारी के लिये डॉक्टरों के पास दौड़ने की जरुरत नहीं है□

"वकील " दोस्तों के पास भी चले जाया करें और उनसे बात किया करें□ समस्याओं के हमेशा □क से अधिक समाधान होते हैं□

**□□□□□□□□□□-□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□:-**

Written by नरि्वकिार सहि
Thursday, 14 June 2018 18:00

□□□□□□ □□□□ □□□□